ठुमक चलत रामचंद्र

Thumak Chalat Ramchandra • भजन • देवनागरी

ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैजनियाँ।

किलकि किलकि उठत धाय गिरत भूमि लटपटाय।
धाय मात गोद लेत दशरथ की रनियाँ॥

अंचल रज अंग झारि विविध भाँति सो दुलारि।
तन मन धन वारि वारि कहत मृदु बचनियाँ॥

विद्रुम से अरुण अधर बोलत मुख मधुर मधुर।
सुभग नासिका में चारु लटकत लटकनियाँ॥

तुलसीदास अति आनंद देख के मुखारविंद।
रघुवर छबि के समान रघुवर छबि बनियाँ॥

ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैजनियाँ॥

रचना / पाठ-परंपरा: गोस्वामी तुलसीदास; पारंपरिक पद
पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।